अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
"फ़ैज़ाने रमज़ान" से लिये गए मवाद की चौथी क़िस्त

Ehtirame Ramazan (Hindi)

एह्तिरामे रमज़ान

कुल सफ़हात 36

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

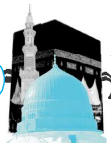

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

एहतिरामे रमज़ान

येह रिसाला **(एहतिरामे रमज़ान)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

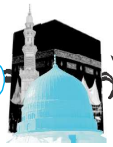

एहतिरामे रमज़ान

रहमत के तलब गारो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह इसी के सबब करम फ़रमा देता है। जैसा कि **एक औरत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।** (بُخاری ج۲ص ۴۰۹ حدیث۳۳۲۱) एक हदीस में सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आलीशान भी मिलता है कि "एक शख़्स ने रास्ते में से एक **दरख़्त** को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे। **अल्लाह तआला** ने ख़ुश हो कर उस की **मग़्फ़िरत** फ़रमा दी।" (مُسلم ص ۱۴۱۰ حدیث ۱۹۱۴) एक सहीह हदीस में **तक़ाज़े** (या'नी क़र्ज़ के मुतालबे) **में नरमी** करने वाले एक शख़्स की **नजात** हो जाने का वाक़िआ भी आया है। (بُخاری ج ۲ ص ۱۲ حدیث ۲۰۷۸) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रहमत** के वाक़िआत जम्अ करने जाएं तो इतने हैं कि जम्अ करना मुश्किल हो जाए।

मुज़्दाबाद ऐ आसियो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है

तहनियत ऐ मुजरिमो ! ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 176)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

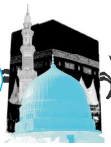

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत करने पर आता है तो यूं भी सबब बनाता है कि किसी एक अ़मल को अपनी बारगाह में शरफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमा देता है और फिर उसी के बाइ़स उस पर रह़मतों की बारिश कर देता है। लिहाज़ा अब एक ह़दीसे मुबारक पेश की जाती है जिस में मुतअ़द्दिद ऐसे लोगों का बयान किया गया है कि वोह किसी न किसी नेकी के सबब **अल्लाह** तआ़ला की गिरिफ़्त से बच गए और रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : एक बार हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि

﴾1﴿ **एक** शख़्स की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) तशरीफ़ लाए लेकिन उस का मां बाप की **इ़ताअ़त** करना सामने आ गया और वोह बच गया।

﴾2﴿ **एक** शख़्स पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के **वुज़ू** (की नेकी) ने उसे बचा लिया।

﴾3﴿ **एक** शख़्स को शयातीन ने घेर लिया लेकिन **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (करने की नेकी) ने उसे बचा लिया।

﴾4﴿ **एक** शख़्स को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) **नमाज़** ने बचा लिया।

﴾5﴿ **एक** शख़्स को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए था और एक ह़ौज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के **रोज़े** आ गए (और इस नेकी ने) उस को सैराब कर दिया।

www.dawateislami.net

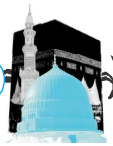

﴾6﴿ **एक** शख़्स को देखा कि जहां अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ह़ल्क़े बनाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन धुत्कार दिया जाता था कि इतने में उस का **ग़ुस्ले जनाबत** (करना) आया और (उस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया।

﴾7﴿ **एक** शख़्स को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अंधेरा ही अंधेरा है और वोह उस अंधेरे में ह़ैरान व परेशान है तो उस के **ह़ज व उ़म्रह** आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में पहुंचा दिया।

﴾8﴿ **एक** शख़्स को देखा कि वोह मुसल्मानों से गुफ़्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं लगाता तो **सिलए रेह़मी** (या'नी रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मुअमिनीन से कहा कि तुम इस से बातचीत करो। तो मुसल्मानों ने उस से बात करना शुरूअ़ की।

﴾9﴿ **एक** शख़्स के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का **सदक़ा** आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया।

﴾10﴿ **एक** शख़्स को ज़बानिया (या'नी अ़ज़ाब के मख़्सूस फ़िरिश्तों) ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने की नेकी आई) और उस ने उसे बचा लिया और रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया।

﴾11﴿ **एक** शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और **अल्लाह** तआ़ला के दरमियान ह़िजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का **ह़ुस्ने अख़्लाक़** आया इस (नेकी) ने उस को बचा लिया और **अल्लाह** तआ़ला से मिला दिया।

www.dawateislami.net

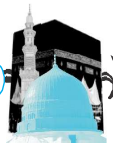

﴾12﴿ **एक** शख़्स को उस का आ'माल नामा उलटे हाथ में दिया जाने लगा तो उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और (इस अ़ज़ीम नेकी की बरकत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया।

﴾13﴿ **एक** शख़्स की नेकियों का वज़्न हलका रहा मगर उस की **सख़ावत** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया।

﴾14﴿ **एक** शख़्स जहन्नम के कनारे पर खड़ा था मगर उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और वोह बच गया।

﴾15﴿ **एक** शख़्स जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में बहाए हुए **आंसू** आ गए और (इन आंसूओं की बरकत से) वोह बच गया।

﴾16﴿ **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर खड़ा था और टहनी की त़रह़ लरज़ रहा था लेकिन उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने ज़न (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान) आया (और इस नेकी) ने उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात़ से गुज़र गया।

﴾17﴿ **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का **मुझ पर दुरूदे पाक** पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खड़ा कर के पुल सिरात़ पार करवा दिया।

﴾18﴿ **मेरी** उम्मत का एक शख़्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब उस पर बन्द थे कि उस का لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही देना आया और उस के लिये जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।

चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब

﴾19﴿ **कुछ** लोगों के होंट काटे जा रहे थे मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से दरयाफ़्त किया, येह कौन हैं ? तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों के दरमियान **चुग़ल ख़ोरी** करने वाले हैं।

www.dawateislami.net

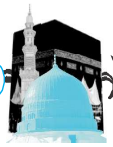

इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा

﴾20﴿ **कुछ** लोगों को ज़बानों से लटका दिया गया था। मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर **झूटी तोहमत** लगाने वाले हैं।" (شرحُ الصُّدور ص۱۸۲ تا ۱۸٤، مُلَخَّصاً)

कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया ! इत़ाअ़ते वालिदैन, वुज़ू, नमाज़, रोज़ा, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, ह़ज व उ़म्रह, सिलए रेह़मी, اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر सदक़ा, ह़ुस्ने अख़्लाक़, सख़ावत, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोना, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न वग़ैरा वग़ैरा नेकियों के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर करम फ़रमा दिया और उन्हें इ़ताब व अ़ज़ाब से रिहाई मिल गई। बहर ह़ाल येह उस के फ़ज़्लो करम के मुआ़मलात हैं, वोह मालिको मुख़्तार عَزَّوَجَلَّ है, जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, येह सब उस का अ़द्ल ही अ़द्ल है। जहां वोह किसी नेकी से ख़ुश हो कर अपनी रह़मत से बख़्श देता है वहीं किसी गुनाह पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गिरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। जैसा कि अभी गुज़श्ता त़वील ह़दीस के आख़िर में **चुग़ल ख़ोरों** और दूसरों पर **गुनाह की तोहमत** बांधने वालों का अन्जाम गुज़रा। पस अ़क़्लमन्द वोही है कि ब ज़ाहिर कोई छोटी सी भी नेकी हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही नेकी नजात का ज़रीआ़ बन जाए और ब ज़ाहिर गुनाह कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

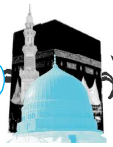

"क़ह्हार" के चार हुरूफ़ की निस्बत से गुनाहगारों की 4 हिकायात

(1) क़ब्र आग से भर गई ! : बेचैन दिलों के चैन, रहमते दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** के बन्दों में से एक बन्दे को क़ब्र में **सो कोड़े** मारने का हुक्म दिया गया, वोह **अल्लाह** से दुआ़ करता रहा यहां तक कि एक कोड़ा रह गया जब एक कोड़ा मारा गया तो उस की **क़ब्र आग से भर गई** जब आग ख़त्म हुई और उस बन्दे को इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने (फ़िरिश्तों से) पूछा : आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा गया ? तो उन्हों ने जवाब दिया : **एक रोज़ तूने बिग़ैर त़हारत (या'नी बे वुज़ू) नमाज़ पढ़ ली थी और एक मज़्लूम के पास से तेरा गुज़र हुवा था मगर तूने उस की मदद न की ।** (شَرحُ مَشْكِلِ الآثار لِلطَّحاوِی ج٨ص٢١٢حديث٣١٨٥، اَلزَّواجِر ج٢ص٢٣٦)

(2) मापने में बे एह्तियाती के सबब इ़ताब : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि एक कय्याल (या'नी ग़ल्ला मापने वाले) ने येह काम छोड़ दिया और इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हुवा । जब वोह मर गया तो उस के बा'ज़ अह़बाब ने उस को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला किया ? उस ने कहा : "मेरा वोह पैमाना जिस में ग़ल्ला वग़ैरा मापा करता था, उस में मेरी बे एह्तियाती की वज्ह से कुछ मिट्टी सी बैठ गई थी, मैं ने उसे साफ़ करने में ग़फ़्लत बरती तो हर मर्तबा मापने के वक़्त ब क़दर उस मिट्टी के कम हो जाता था । मैं उस क़ुसूर के सबब इ़ताब में गिरिफ़्तार हूं ।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١)

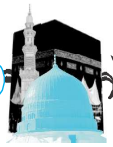

(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ : **इसी** त़रह़ एक और शख़्स भी अपनी तराज़ू से मिट्टी वग़ैरा साफ़ नहीं करता था और इसी त़रह़ चीज़ तोल देता था। जब वोह मर गया तो उस को क़ब्र में अ़ज़ाब शुरूअ़ हो गया, यहां तक कि **लोगों ने उस की क़ब्र से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ सुनी।** बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن (या'नी नेक लोगों) को क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ सुन कर रह़म आ गया और उन्हों ने उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की तो इस की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने उस का अ़ज़ाब दफ़्अ़ किया। **(اَیضاً)**

ह़राम की कमाई कहां जाती है ? : **मज़्कूरा** दोनों लरज़ा ख़ेज़ ह़िकायात से वोह लोग ज़रूर दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो डन्डी मारते और कम माप तोल करते हैं। मुसल्मानो ! डन्डी मार कर कम माप कर बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर माल में कुछ ज़ियादती नज़र आ भी जाती है मगर ऐसी आमदनी किस काम की ! बसा अवक़ात दुन्या में भी इस क़िस्म का माल वबाल बन जाता है। हो सकता है कि डॉक्टरों की फ़ीसों, बीमारियों की दवाओं, जेब कतरों, चोरों या रिश्वत ख़ोरों के हाथों में येह माल चला जाए और फिर साथ ही साथ مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत का अ़ज़ाबे शदीद भी भुगत्ना पड़ जाए।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

आग के दो पहाड़ : **रूहुल बयान** में है : "जो शख़्स नाप तोल में ख़ियानत करता है, क़ियामत के रोज़ उसे दोज़ख़ की गहराइयों में डाला

www.dawateislami.net

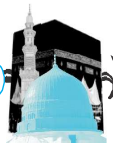

जाएगा और **आग के दो पहाड़ों** के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा : येह दोनों पहाड़ नापो और तोलो ! जब तोलने लगेगा तो आग उसे जला डालेगी।" (تفسیر روحُ البیان ج۱۰ص۳٦٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में चन्द फ़ानी सिक्के हासिल करने के लिये अगर डन्डी मार ली तो किस क़दर शदीद अ़ज़ाब की वईद है। आज मा'मूली गरमी बरदाश्त नहीं होती तो जहन्नम में आग के पहाड़ों की तपिश किस त़रह़ सही जा सकेगी। ख़ुदारा ! अपने ह़ाल पर रह़्म करते हुए माल की हवस से दूर रहिये, वरना माले ग़ैरे ह़लाल दोनों जहानों में वबाल ही वबाल साबित होगा।

(4) तिन्के का बोझ : मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल के एक नौ जवान ने गुनाहों से तौबा की, फिर 70 साल मुसल्सल इबादत करता रहा, रात जागता और दिन में रोज़ा रखता, **न किसी साए के नीचे आराम करता और न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता।** जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बा'ज़ दोस्तों ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला किया ? उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था उस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۵۱)

www.dawateislami.net

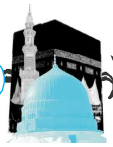

गुनाह आख़िर गुनाह है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ जाओ ! थर्रा उठो !! कि एक आ़बिदो ज़ाहिद और नेक बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस वज्ह से जन्नत से रोक दिया गया कि उस ने एक **तिन्का** उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ले कर उस से दांतों में ख़िलाल कर लिया और फिर बे मुआ़फ़ करवाए इन्तिक़ाल कर गया। ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये !! अब एक तिन्के की कहां बात है ! आज कल तो लोग बड़ी बड़ी क़ीमती अमानतें हड़प कर जाते और डकार तक नहीं लेते।

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ الله

अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये ताख़ीर गुनाह है : मुसल्मानो ! डर जाओ !! हुक़ूक़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) का मुआ़मला निहायत सख़्त है अगर किसी बन्दे का माल दबा लिया, या उस को गाली दे दी, आंखें दिखा कर डराया, धम्काया, डांट डपट की जिस से उस का दिल दुखा। अल ग़रज़ किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शर्ई उस की दिल आज़ारी की या क़र्ज़ा दबा लिया बल्कि बिला इजाज़ते क़र्ज़ ख़्वाह या बिग़ैर सह़ीह़ मजबूरी के क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर ही की, येह सब बन्दों की ह़क़ तलफ़ियां हैं। **क़र्ज़** की बात चली है तो येह भी बताता चलूं कि **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **कीमियाए सआ़दत** में नक़्ल करते हैं : "जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी त़रह़ अदा कर दूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ़ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए।" (انظر:إتحاف السّادة ج ٦ ص ٤٠٩) और अगर क़र्ज़दार

www.dawateislami.net

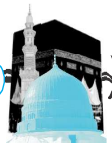

क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की ह़ालत में हो या सो रहा हो और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत उतरती है। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की ह़ालत में भी उस के साथ रहता है। अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनाहगार है। उस का येह फ़े'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं।" (کیمیائے سعادت ج۱ص۳۳۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन पैसे का वबाल : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से क़र्ज़े की अदाएगी में सुस्ती और झूटे ह़ियलो ह़ुज्जत करने वाले शख़्स ज़ैद के बारे में इस्तिफ़्सार हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ैद फ़ासिक़ो फ़ाजिर, मुरतकिबे कबाइर, ज़ालिम, कज़्ज़ाब, मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अल्क़ाब अपने लिये चाहता है! अगर इस ह़ालत में मर गया और दैन (क़र्ज़) लोगों का इस पर बाक़ी रहा, इस की नेकियां उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के मुत़ालबे में दी जाएंगी और क्यूंकर दी जाएंगी (या'नी किस त़रह़ दी जाएंगी येह भी सुन लीजिये) तक़रीबन तीन पैसा दैन (क़र्ज़) के इ़वज़ (या'नी बदले) **सात सो नमाज़ें बा जमाअ़त** (देनी पड़ेंगी)। जब इस (क़र्ज़ा दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेंगी उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के गुनाह इस (मक़्रूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फेंक दिया जाएगा।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 25, स. 69 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

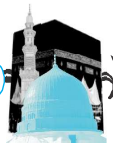

मत दबा क़र्ज़ा किसी का ना बकार
रोएगा दोज़ख़ में वरना ज़ार ज़ार

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ الله

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म करने वाला भी जब तक मज़्लूम को राज़ी नहीं कर लेगा उस वक़्त तक उस की ख़लासी (या'नी छुटकारा) ना मुम्किन है। हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़्लो करम से क़ियामत के रोज़ ज़ालिम व मज़्लूम में सुल्ह़ करवा देगा, ब सूरते दीगर उस मज़्लूम को ज़ालिम की नेकियां दे दी जाएंगी, अगर इस से भी मज़्लूम या मज़्लूमीन के हुक़ूक़ अदा न हुए तो मज़्लूमीन के गुनाह ज़ालिम के सर पर डाल दिये जाएंगे और वोह जहन्नम रसीद कर दिया जाएगा। وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى

क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ? : ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि **मुफ़्लिस** कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से **मुफ़्लिस** तो वोह है जिस के पास दिरहम व दुन्यावी साज़ो सामान न हो। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत का **मुफ़्लिस तरीन** शख़्स वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात तो ले कर आएगा मगर साथ ही किसी को गाली भी दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, उस का माले नाह़क़ खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा, उस को मारा होगा, पस इन सब गुनाहों के बदले में उस की नेकियां ली जाएंगी, पस अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाएं और मज़ीद ह़क़दार बाक़ी हों तो बदले में उन (या'नी मज़्लूमों) के गुनाह ले कर इस

www.dawateislami.net

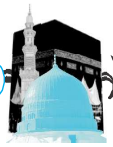

(या'नी ज़ालिम) पर डाले जाएंगे फिर उस (ज़ालिम) शख़्स को जहन्नम में डाल दिया जाएगा। **(مسلم ص١٣٩٤حديث٢٥٨١)**

ज़ालिम से मुराद कौन है ? : याद रहे ! यहां ज़ालिम से मुराद सिर्फ़ क़ातिल, डाकू या मारधाड़ करने वाला ही नहीं बल्कि जिस ने ब ज़ाहिर किसी की थोड़ी सी भी ह़क़ तलफ़ी की मसलन किसी का एकआध रूपिया ही दबा लिया हो, मज़ाक़ उड़ा कर या बिला इजाज़ते शर्ई डांट डपट कर के या ग़ुस्से में घूर कर दिल दुखाया हो वोह भी ज़ालिम है। अब येह जुदा बात है कि जिस पर इस त़रह़ के ज़ुल्म हुए इस "मज़्लूम" ने भी "उस ज़ालिम" की बा'ज़ ह़क़ तलफ़ियां की हों, इस सूरते ह़ाल में दोनों एक दूसरे के ह़क़ में जुदा जुदा मुआ़मलात में "ज़ालिम" भी हैं और "मज़्लूम" भी।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** उनैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो, जब तक वोह **ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद** का बदला न अदा करे।" या'नी जिस किसी का ह़क़ जिस किसी ने दबाया हो उस का फ़ैसला होने तक दोज़ख़ या जन्नत में दाख़िल न होगा। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص٥١) **ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद** की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक्तबतुल मदीना** का मत़्बूआ़ तह़रीरी बयान **ज़ुल्म का अन्जाम** ज़रूर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम सब मुसल्मानों को एक दूसरे की ह़क़ तलफ़ी से बचा और इस सिल्सिले में जो कुछ कोताहियां हो चुकी हैं उन से सच्ची तौबा करने और इन्हें आपस में मुआ़फ़ करवा लेने की तौफ़ीक़

www.dawateislami.net

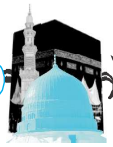

मर्हमत फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे रमज़ान में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस को **रमज़ान** के वक़्त मौत आई वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **यौमे अ़रफ़ा** (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) के वक़्त आई वोह भी **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **सदक़ा** देने की ह़ालत में आई वोह भी दाख़िले जन्नत होगा।" (حِلْيَةُ الْاَولِيَاء ج٥ص٢٦ حديث٦١٨٧) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि माहे रमज़ान में मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है। (شَرْحُ الصُّدُور ص١٨٧)

क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब : उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है : अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बिशारत बुन्याद है : "**रोज़े** की ह़ालत में जिस का इन्तिक़ाल हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाता है।"

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٣ص٥٠٤ حديث٥٥٥٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ! : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

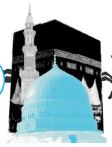

को फ़रमाते हुए सुना : "येह रमज़ान तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयात़ीन को क़ैद कर दिया जाता है। मह़रूम है वोह शख़्स जिस ने **रमज़ान** को पाया और उस की **मग़्फ़िरत** न हुई कि **जब इस की रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !"** (مُعجَم اَوسَط ج۵ص۳۶۶حدیث۷۶۲۷)

जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**रमज़ान** आ गया बरकत वाला महीना है, **अल्लाह** तआ़ला ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये, इस में आस्मान के दरवाज़े खोले जाते और **जहन्नम** के दरवाज़े बन्द किये जाते हैं, और इस में मरदूद शयात़ीन क़ैद कर दिये जाते हैं, इस में एक रात है, **ह़ज़ार महीनों** से बेहतर, जो इस की भलाई से मह़रूम रहा वोह बिल्कुल ही मह़रूम रहा।"

(نَسائی ص۳۵۵حدیث۲۱۰۳)

शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब रमज़ान आता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (بُخاری ج ۱ ص ۶۲۶ حدیث ۱۸۹۹) और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (اَیضاً ص ۳۹۹ حدیث ۳۲۷۷) एक रिवायत में है कि रह़मत के दरवाज़े खोले जाते हैं।

(مسلم ص ۵۴۳ حدیث ۱۰۷۹)

www.dawateislami.net

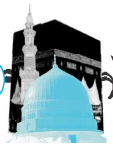

गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहर कैफ़ आ़म मुशाहदा येही है कि **रमज़ानुल मुबारक** में हमारी मसाजिद ग़ैरे रमज़ान के मुक़ाबले में ज़ियादा आबाद हो जाती हैं, नेकियां करने में आसानियां रहती हैं और इतना ज़रूर है कि माहे रमज़ान में गुनाहों का सिल्सिला कुछ न कुछ कम हो जाता है।

जूं ही सरकश शयात़ीन आज़ाद होते हैं ! : रमज़ानुल मुबारक के रुख़्सत होते ही, सरकश शयात़ीन आज़ाद हो जाते हैं और अफ़्सोस ! गुनाहों का ज़ोर बढ़ जाता है। ख़ुसूसन ईद के दिन गुनाहों की निहायत कसरत हो जाती है, गोया एक महीने की क़ैद के सबब सरकश शयात़ीन बेह़द बिफर चुके हैं और माहे **रमज़ानुल मुबारक** की सारी कसर वोह ईद के रोज़ ही निकाल देना चाहते हैं, तफ़रीह़ गाहें बे पर्दा औ़रतों और मर्दों से भर जाती हैं, ईद के लिये नई नई फ़िल्में और जदीद डिरामे लगा दिये जाते हैं, आह ! **शैत़ान** के हाथों बे शुमार मुसल्मान खिलोना बन कर रह जाते हैं, मगर ऐसे ख़ुश नसीब भी होते हैं जो **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़फ़्लत नहीं करते और **शैत़ान** के बहकाने से महफ़ूज़ रहते हैं।

आतश परस्त ने माहे रमज़ान का एह़तिराम किया तो..... (ह़िकायत) : **बुख़ारा** में एक मजूसी (आतश परस्त) रहता था एक मर्तबा **रमज़ान शरीफ़** में वोह अपने बेटे के साथ मुसल्मानों के बाज़ार से गुज़र रहा था, उस के बेटे ने अ़लल ए'लान कोई चीज़ ख़ानी शुरूअ़ कर दी, मजूसी ने येह देखते ही अपने बेटे को एक **त़मांचा** रसीद कर दिया और डांटते हुए कहा : तुझे **रमज़ानुल मुबारक** के महीने में

www.dawateislami.net

मुसल्मानों के बाज़ार में खाते हुए शर्म नहीं आती ! लड़के ने कहा : अब्बाजान ! आप भी तो रमज़ान शरीफ़ में खाते हैं। वालिद ने कहा : मैं मुसल्मानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खाता हूं, इस माहे मुबारक की बे हुरमती नहीं करता। कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुए देखा तो हैरत से पूछा : तू तो मजूसी (या'नी आग का पुजारी) था, जन्नत में कैसे आ गया ? कहने लगा : "वाक़ेई मैं मजूसी था, लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **एहतिरामे रमज़ान की बरकत से मुझे ईमान की दौलत से और मरने के बा'द जन्नत से मुशर्रफ़ फ़रमाया।"** (نُزهَةُ الْمَجَالِس ج١ص٢١٧)

रमज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी सज़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **रमज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम के सबब एक आतश परस्त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दौलते ईमान से नवाज़ कर जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से मालामाल फ़रमा दिया। इस हिकायत से ख़ुसूसन उन ग़ाफ़िलों को दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो मुसल्मान होने के बा वुजूद **रमज़ानुल मुबारक** में अव्वल तो वोह रोज़ा नहीं रखते, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिगरेट के कश लगाते, पान चबाते, ह़त्ता कि बा'ज़ तो इतने बेबाक व बे मुरव्वत कि सरे आ़म पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शरमाते। ऐसे लोगों के लिये फ़िक़्ही किताबों में सख़्त सज़ा का हुक्म है।

क्या आप को मरना नहीं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! ख़ूब सोचिये !! जब दुन्या में रोज़ाख़ोरों की सख़्त सज़ा तज्वीज़

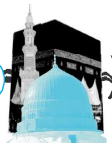

की गई है (येह सज़ा सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम ही दे सकता है) तो आख़िरत की सज़ा किस क़दर होलनाक होगी ! मुसल्मानो ! होश में आइये ! कब तक इस दुन्या में गुलछर्रे उड़ाएंगे ? क्या आप को मरना नहीं ? क्या इस दुन्या में हमेशा इसी त़रह़ दन्दनाते फिरेंगे ? याद रखिये ! एक न एक दिन मौत ज़रूर आएगी और आप का रिश्तए ह़यात मुन्क़त़ेअ़ कर के (या'नी काट कर) नर्म व आराम देह गदेलों से उठा कर फ़र्शे ख़ाक पर सुला देगी, हर त़रह़ के सामाने त़रब से आरास्ता व पैरास्ता कमरों से निकाल कर अंधेरी क़ब्रों में पहुंचा देगी, फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा, अभी मौक़अ़ है, गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और रोज़ा व नमाज़ की पाबन्दी इख़्तियार कीजिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

सुन्नतों भरे बयानात की बरकात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में सुर्ख़रूई नसीब होगी। आप की तरग़ीब के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई 1987 सि.ई. ता 1990 सि.ई. एक सियासी पार्टी से वाबस्ता रहे। आए दिन के फ़सादात से बेज़ार हो कर घर वालों ने उन्हें बैरूने मुल्क भेजने की ठानी। चुनान्चे 3.11.90 को वोह सल्त़नते

www.dawateislami.net

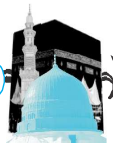

उ़म्मान के दारुल इमारात **मस्क़त़** की एक गारमेन्ट फ़ेक्टरी में मुलाज़िम हो गए। 1992 सि.ई. में **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई काम के सिल्सिले में उन की फ़ेक्टरी में भरती हुए। उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बने। फ़ेक्टरी का माह़ोल बहुत ही ख़राब था, सिर्फ़ उन के शो'बे ही को ले लीजिये उस में आठ या नव टेप रेकॉर्डर थे जिन के ज़रीए मुख़्तलिफ़ ज़बानों, मसलन उर्दू, पंजाबी, पश्तो, हिन्दी और बंगाली वग़ैरा में ऊंची आवाज़ के साथ गाने चलाने का सिल्सिला रहता। दा'वते इस्लामी वाले **आ़शिक़े रसूल** की सोह़बत की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह गाने बाजों से मुतनफ़्फ़िर हो गए। बाहमी मश्वरे से उन्हों ने **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाली सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलानी शुरूअ़ कर दीं। इब्तिदाअन बा'ज़ लोगों ने मुख़ालफ़त भी की मगर उन्हों ने हिम्मत नहीं हारी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे बयानात चलाने की बरकात का ख़ुद उन पर भी ज़ुहूर होने लगा। बिल ख़ुसूस **क़ब्र की पहली रात, नैरंगिये दुन्या, बद नसीब दूल्हा, क़ब्र की पुकार और तीन क़ब्रें** नामी बयानात ने उन्हें हिला कर रख दिया, आख़िरत की तय्यारी की **मदनी सोच** मिली और उन का दिल गुनाहों से नफ़रत करने लगा। इस दौरान चन्द और अफ़राद भी सुन्नतों भरे बयानात से मुतअस्सिर हो कर क़रीब आ गए। जिन्हों ने उन को नेकी के कामों में लगाया था वोह **आ़शिक़े रसूल** मुलाज़मत छोड़ कर अपने मुल्क लौट गए। उन्हों ने सुन्नतों भरे बयानात की 90 केसिटें मंगवा लीं। **पहले उन की फ़ेक्टरी में सिर्फ़ 50 या 60 नमाज़ी थे बयानात सुन सुन कर नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ते**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

बढ़ते اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **200 से 250 हो गई।** उन्हों ने मिल कर 400 वॉट का क़ीमती स्पीकर ख़रीद कर अपनी मन्ज़िल की दीवार पर नस्ब कर लिया और धूमधाम से केसिटें चलाने लगे रोज़ाना तिलावते कलामे पाक, ना'त शरीफ़ और सुन्नतों भरे बयान की केसिट चलाने का मा'मूल बना लिया। रफ़्ता रफ़्ता उन के पास 500 केसिटें जम्अ़ हो गईं। उन का कहना है कि मुझ समेत **पांच इस्लामी भाइयों** ने अपने आप को दा'वते इस्लामी के मदनी रंग में रंग लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद दर्स का आग़ाज़ हो गया। फिर कुछ अ़र्से बा'द रफ़्ता रफ़्ता उन की फ़ैक्टरी में **हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** शुरूअ़ हो गया, इज्तिमाअ़ में कमो बेश 250 इस्लामी भाई शिर्कत करते थे, **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) भी क़ाइम हो गया। सुन्नतों की बहारें आने लगीं, मुतअ़द्दिद इस्लामी भाइयों ने अपने चेहरे पर **मदनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी मुबारक दाढ़ी सजा ली, 20 से 25 इस्लामी भाइयों के सरों पर **इमामे के ताज** जगमगाने लगे। उन की फ़ैक्टरी के मेनेजर इब्तिदाअन केसिटें चलाने वग़ैरा से मन्अ़ करते रहे मगर बयानात की केसिटों की आवाज़ उन के कानों में भी रस घोलती रही और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिल आख़िर वोह भी मुतअस्सिर हो ही गए न सिर्फ़ मुतअस्सिर हुए बल्कि नमाज़ी भी बन गए और एक मुट्ठी दाढ़ी भी सजा ली।

वोह इस्लामी भाई वापस अपने मुल्क आ चुके हैं और उन्हें एक डिवीज़न की मुशावरत की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत भी मिली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों के ज़रीए इस्लाह़ का सामान हुवा। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह सुन्नतों भरे बयान या **मदनी**

www.dawateislami.net

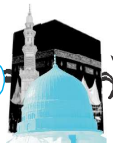

मुज़ाकरे की कम अज़ कम एक केसिट रोज़ाना सुनने का मा'मूल बना ले, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऐसी बरकतें मिलेंगी कि दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा ।[1]

ग़फ़्लत से नेकी की दा'वत सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मक्तबतुल मदीना** से जारी कर्दा बयानात की केसिटें सुनने की भी कैसी बरकात हैं ![2] येह सब मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, वरना बे शुमार अफ़्राद ऐसे भी देखे जाते हैं कि वोह बरसहा बरस से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर होते हैं मगर उन पर मदनी रंग नहीं चढ़ पाता । शायद इस की एक वज्ह येह भी हो सकती है कि वोह बैठ कर तवज्जोह के साथ बयान न सुनते हों, बे परवाई के साथ इधर उधर देखते हुए या मोबाइल फ़ोन पर बातें वग़ैरा करते हुए सुनने से बयानात की बरकात कहां से मिलेंगी ! याद रहे ! ग़फ़्लत के साथ नसीह़त सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है मुसल्मानों को इस ह़रकत से बचना ज़रूरी है चुनान्चे पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** की आयत नम्बर 2 और 3 में इर्शादे रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ है :

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ﴿۲﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब उन के रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए, उन के दिल खेल में पड़े हैं ।

---

1 : सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों की बरकात की तफ़्सीलात जानने के लिये "बयानात की केसिटों के करिश्मात" नामी रिसाला (54 सफ़ह़ात) मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये । **मजलिसे मक्तबतुल मदीना 2 :** रिक़्क़त अंगेज़ बयानात की केसिटें और मेमोरी कार्ड मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये ।

www.dawateislami.net

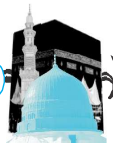

साल भर की नेकियां बरबाद : हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जन्नत माहे रमज़ान के लिये एक साल से दूसरे साल तक सजाई जाती है, पस जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत कहती है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस महीने में अपने बन्दों में से (मेरे अन्दर) रहने वाले अ़त़ा फ़रमा दे।" और हूरे ईन कहती हैं : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस महीने में हमें अपने बन्दों में से शौहर अ़त़ा फ़रमा।" फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस माह में अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त की, कि न तो कोई नशा आवर शै पी और न ही किसी मोमिन पर **बोहतान** लगाया और न ही इस माह में कोई **गुनाह** किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर रात के बदले उस का **सो हूरों** से निकाह़ फ़रमाएगा और उस के लिये **जन्नत** में सोने, चांदी, याक़ूत और ज़बरजद का ऐसा मह़ल बनाएगा कि अगर सारी दुन्या जम्अ़ हो जाए और इस मह़ल में आ जाए तो इस मह़ल की उतनी ही जगह घेरेगी जितना बकरियों का एक बाड़ा दुन्या की जगह घेरता है, और **जिस ने इस माह में कोई नशा आवर शै पी या किसी मोमिन पर बोहतान बांधा या इस माह में कोई गुनाह किया तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे।** पस तुम माहे रमज़ान (के ह़क़) में कोताही करने से डरो क्यूं कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है। **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे लिये ग्यारह महीने कर दिये कि इन में ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो और तलज़्ज़ुज़ (लज़्ज़त) ह़ासिल करो और अपने लिये एक महीना ख़ास कर लिया है। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो।" **(مُعجَم اَوسَط ج۲ ص۴۱٤ حديث۳٦٨٨)**

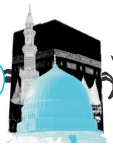

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जहां माहे **रमज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम करने वालों के लिये उख़्रवी इन्आ़मातो इक्रामात की बिशारात हैं वहां इस मुबारक महीने की ना क़द्री करते हुए इस में गुनाह करने वालों के लिये वईदात भी हैं। इस ह़दीसे पाक में नशा आवर चीज़ पीने और मोमिन पर बोहतान बांधने का ख़ुसूसिय्यत के साथ तज़्किरा है याद रखिये ! शराब **उम्मुल ख़बाइस** (या'नी बुराइयों की मां) है इस का पीना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो चीज़ ज़ियादा मिक़्दार में नशा लाए तो उस की थोड़ी सी मिक़्दार भी ह़राम है।" **(ابوداؤد ج۳ص۴۵۹حدیث۳۶۸۱)**

दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप : मोमिन पर बोहतान बांधना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ह़दीसे पाक में है : "जो किसी मोमिन के बारे में ऐसी चीज़ कहे जो उस में न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (बोहतान तराश) को उस वक़्त तक **रदग़तुल ख़बाल** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए।" **(ابوداؤد ج۳ص۴۲۷حدیث۳۵۹۷)** रदग़तुल ख़बाल जहन्नम में वोह मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 313) मुह़क़्क़िक़ अ़ल्लल इत़्लाक़ ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस से मुराद येह है कि जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़िक़ हो चुका है उसे भुगत्ने के बा'द पाक हो जाए।" **(اَشِعَّةُ اللَّمَعات ج۳ص۲۹۰مُلَخَّصاً)**

www.dawateislami.net

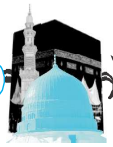

रमज़ान में गुनाह करने वाला : सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है : दो जहां के सुल्त़ान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में इन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में इन का ह़राम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : **"जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले रमज़ान तक अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते रहेंगे पस अगर येह शख़्स अगला माहे रमज़ान पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो क्यूं कि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़मला है।"** (مُعجَم صغير ج١ ص٢٤٨)

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

दिल का सियाह नुक्ता : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! **माहे रमज़ान** की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुक़ाबले में जिस त़रह़ नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ दीगर महीनों के मुक़ाबले में गुनाहों की हलाकत ख़ैज़ियां भी बढ़ जाती हैं। रमज़ान शरीफ़ के इलावा भी गुनाहों से बचना ही चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

www.dawateislami.net

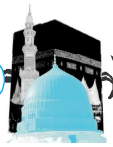

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक सियाह नुक़्ता पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है। और येही वोह ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** तआला ने इस तरह़ फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،المطففین:۱٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(ترمذی ج۵،ص۲۲۰ حدیث۳۳٤۵)

दिल की सियाही का इलाज : **इस** सियाह क़ल्बी का इलाज ज़रूरी है और इस के इलाज का एक मुअस्सिर ज़रीआ किसी जामेए शराइत पीर साहिब से निस्बत भी है, लिहाज़ा किसी ऐसे मुर्शिद का मुरीद बन जाए जो परहेज़ गार और मुत्तबेए सुन्नत हो, जिस की ज़ियारत ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद दिलाए, जिस की गुफ़्तगू सलातो सुन्नत का शौक़ उभारे, जिस की सोहबत क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का जज़्बा बढ़ाए। अगर ख़ुश क़िस्मती से ऐसा पीरे कामिल मुयस्सर आ गया तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ सच्ची तौबा की सआदत नसीब होगी और **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** की रह़मत से **दिल की सियाही का इलाज** हो जाएगा।

गुनाह की मुआफ़ी के लिये 8 आ'माल : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ 911 सफ़ह़ात पर

www.dawateislami.net

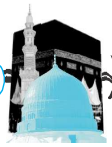

मुश्तमिल किताब, "**एह़याउल उ़लूम** मुतर्जम जिल्द 4" सफ़ह़ा 141 पर है : रिवायात से मा'लूम होता है गुनाह के बा'द जब आठ आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक अ़मल) किये जाएं तो उस (गुनाह) की बख़्शिश (या'नी मुआ़फ़ी) की उम्मीद होती है। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ दिल से है : ﴾1﴿ तौबा या तौबा का अ़ज़्म ﴾2﴿ गुनाह से बाज़ रहने की चाहत ﴾3﴿ अ़ज़ाब होने का ख़ौफ़ ﴾4﴿ मग़्फ़िरत की उम्मीद। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ आ'ज़ा से है : ﴾1﴿ दो रक्अ़त नमाज़े (तौबा) अदा करना ﴾2﴿ 70 मर्तबा इस्तिग़्फ़ार करना और 100 मर्तबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ना ﴾3﴿ सदक़ा करना ﴾4﴿ रोज़ा रखना।

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
पए ताजदारे ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र का भयानक मन्ज़र ! : मन्क़ूल है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक बार ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़े के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी, तो दिल में उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई, चुनान्चे बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर **मुन्कशिफ़**

www.dawateislami.net

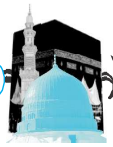

(या'नी ज़ाहिर) फ़रमा ।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए ! अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था ! क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रियाद कर रहा है :

يَاعَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّار۔

या'नी या अ़ली ! मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं । क़ब्र के दह़्शत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया । आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त पेश की । ग़ैब से आवाज़ आई : ''ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ! इस की सिफ़ारिश मत करो । क्यूं कि येह शख़्स **रमज़ानुल मुबारक** की बे ह़ुरमती करता, **रमज़ानुल मुबारक** में भी गुनाहों से बाज़ न आता था, दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था ।'' मौलाए काएनात **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस के

www.dawateislami.net

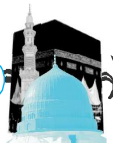

आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरिया जोश में आ गया और निदा आई : "ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया।" चुनान्चे उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। **(انیسُ الْواعِظین ص۲۵،۲۶)**

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को
तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दों से गुफ़्तगू : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अ़ज़मतो शान के क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अहले क़ुबूर से गुफ़्तगू फ़रमा लिया करते थे। एक और **ह़िकायत** पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे, मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार हम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हमराह मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान गए। ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें

www.dawateislami.net

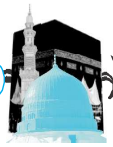

बताएं ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : **या अमीरल मुअमिनीन** ! आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए। अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ। येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : **या अमीरल मुअमिनीन** ! हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा। (شَرْحُ الصُّدُور ص۲۰۹، ابن عساکر ج۲۷ ص۳۹۵)

रमज़ान की रातों में खेलकूद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुज़श्ता दोनों ह़िकायात में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** हैं। ज़िन्दा इन्सान ख़ूब फुदक्ता है मगर जब मौत का शिकार हो कर क़ब्र में उतार दिया जाता है, उस वक़्त आंखें बन्द होने के बजाए ह़क़ीक़त में खुल चुकी होती हैं। अच्छे आ'माल और राहे ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़

www.dawateislami.net

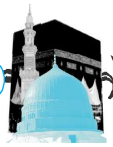

आता है उस में भलाई का इम्कान न होने के बराबर होता है, वुरसा से येह उम्मीद कम ही होती है कि वोह अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ की आख़िरत की बेहतरी के लिये माले कसीर ख़र्च करें, बल्कि मरने वाला अगर ह़राम व ना जाइज़ माल मसलन गुनाहों के अस्बाब जैसा कि आलाते मूसीक़ी, विडियो गेम्ज़ की दुकान, म्यूज़िक सेन्टर, सिनेमा घर, शराब ख़ाना, जूए का अड्डा, मिलावट वाले माल का धोके भरा कारोबार वग़ैरा पीछे छोड़े तो उस मरने वाले के लिये मरने के बा'द सख़्त तरीन और ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान है। **क़ब्र का भयानक मन्ज़र** नामी ह़िकायत में **रमज़ानुल मुबारक** की बे हुरमती करने वाले का ख़ौफ़नाक अन्जाम पेश किया गया है इस से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये। आह ! सद आह ! **रमज़ानुल मुबारक** की पाकीज़ा रातों में कई नौ जवान मह़ल्ले में क्रिकेट, फ़ुटबॉल वग़ैरा खेल खेलते, ख़ूब शोर मचाते हैं और इस त़रह़ येह बद नसीब ख़ुद तो इ़बादत से मह़रूम रहते ही हैं, दूसरों के लिये भी मुसीबत का बाइ़स बनते हैं, न तो ख़ुद इ़बादत करते हैं न दूसरों को करने देते हैं। इस क़िस्म के खेल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले हैं। नेक लोग तो इन खेलों से सदा दूर ही रहते हैं, ख़ुद खेलना तो दर कनार ऐसे खेल तमाशे देखते भी नहीं बल्कि इस क़िस्म के खेलों का आंखों देखा ह़ाल (Commentary) भी नहीं सुनते।

रोज़े में वक़्त पास करने के लिये.....: बा'ज़ नादान ऐसे भी होते हैं जो रोज़ा तो रख लेते हैं मगर उन बेचारों का वक़्त "पास" नहीं

www.dawateislami.net

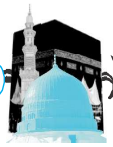

होता ! लिहाज़ा वोह भी एह़तिरामे रमज़ान शरीफ़ को एक त़रफ़ रख कर ना जाइज़ कामों का सहारा ले कर वक़्त "पास" करते हैं और यूं **रमज़ान शरीफ़** में शत़रन्ज, ताश, लुड्डो, गाने बाजे और सोश्यल मीडिया के ज़रीए़ तबाहकार प्रोग्रामों वग़ैरा में मश्ग़ूल हो जाते हैं। **याद रखिये !** शत़रन्ज और ताश वग़ैरा पर किसी क़िस्म की बाज़ी या शर्त़ न भी लगाई जाए तब भी येह खेल ना जाइज़ हैं। बल्कि ताश में चूंकि जानदारों की तस्वीरों की ता'ज़ीम भी होती है इस लिये मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताश खेलने को मुत़्लक़न ह़राम लिखा है। चुनान्चे फ़रमाते हैं : गन्जिफ़ा (पत्तों के ज़रीए़ खेले जाने वाले एक खेल का नाम और) ताश ह़रामे मुत़्लक़ हैं कि इन में इ़लावा लह्वो लइ़ब के तस्वीरों की ता'ज़ीम है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 141)

अफ़्ज़ल इ़बादत कौन सी है ? : ऐ **जन्नत के त़लब गार रोज़ादार इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक** के मुक़द्दस लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात व ख़ुराफ़ात में बरबाद होने से बचाइये ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है इस को ग़नीमत जानिये, ताश की गड्डियों और फ़िल्मी गानों के ज़रीए़ वक़्त "पास" (बल्कि बरबाद) करने के बजाए तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये। भूक प्यास की शिद्दत जिस क़दर ज़ियादा महसूस होगी सब्र करने पर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी उसी क़दर ज़ाइद मिलेगा। जैसा कि मन्क़ूल है : "اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا۔ या'नी अफ़्ज़ल इ़बादत वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा है।"

www.dawateislami.net

(شرح الطیبی علی مشکاۃ المصابیح ج ٥ ص١٧٢٩ تحت الحدیث ٢٢٦٧) इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''इबादात में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से सवाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है ।'' (شرح مسلم لِلنّوَوی ج٤ ص١٥٢) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही वज़्न दार होगा ।'' (تذکرۃ الاولیاء ص ٩٥)

रोज़े में ज़ियादा सोना : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ''कीमियाए सआ़दत'' में फ़रमाते हैं : ''रोज़ादार के लिये सुन्नत येह है कि दिन के वक़्त ज़ियादा देर न सोए बल्कि जागता रहे ताकि भूक और ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) का असर महसूस हो ।'' (کیمیائے سعادت ج١ ص٢١٦) (अगर्चे अफ़्ज़ल कम सोना ही है फिर भी अगर किसी की हक़ तलफ़ी न होती हो और कोई मानेए शरई न हो तो ज़रूरी इबादात के इलावा कोई शख़्स सारा वक़्त सोया रहे तो गुनाहगार न होगा)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! साफ़ ज़ाहिर है कि जो दिन भर **रोज़े** में सो कर वक़्त गुज़ार दे उस को रोज़े का पता ही क्या चलेगा ? ज़रा सोचो तो सही ! **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی तो ज़ियादा सोने से भी मन्अ़ फ़रमाते हैं कि इस

www.dawateislami.net

त़रह़ भी वक़्त फ़ालतू "पास" हो जाएगा। तो जो लोग खेल तमाशों और ह़राम कामों में वक़्त बरबाद करते हैं वोह किस क़दर मह़रूम व बद नसीब हैं। इस मुबारक महीने की क़द्र कीजिये, इस का एह़तिराम बजा लाइये, इस में ख़ुशदिली के साथ रोज़े रखिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल कीजिये।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने रमज़ान से हर मुसल्मान को मालामाल फ़रमा। इस माहे मुबारक की हमें क़द्रो मन्ज़िलत नसीब कर और इस की बे अदबी से बचा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एह़तिरामे **माहे रमज़ानुल मुबारक** का दिल में जज़्बा बढ़ाने, इस की ख़ूब बरकतें पाने, ढेरों ढेर नेकियां कमाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल को अपनाने और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह फ़वाइद ह़ासिल होंगे कि आप की अ़क़्ल ह़ैरान रह जाएगी। एक आ़शिक़े रसूल की रूह़ परवर "मदनी बहार" सुनिये और झूमिये : चुनान्चे, एक इस्लामी भाई को **मदनी इन्आ़मात** से प्यार था और रोज़ाना **फ़िक्रे**

www.dawateislami.net

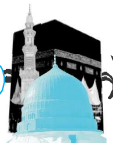

मदीना करने का उन का मा'मूल भी था। एक बार वोह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर थे। इसी दौरान उन पर बाबे करम खुल गया ! हुवा यूं कि रात जब सोए तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम थे कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "जो मदनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।**"

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्तफ़ा

है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 373)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िक्रे मदीना क्या है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, दीनी त़लबा के लिये 92 और दीनी त़ालिबात के लिये 83 जब कि मदनी मुन्नों के लिये 40 नीज़ ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों या'नी गूंगे बहरों के लिये 25 **मदनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं। **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला

www.dawateislami.net

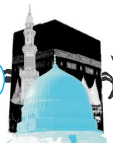

मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन मिल सकता है। रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए उस में दिये हुए ख़ाने पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाएज़ा लेते हुए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में **फ़िक्रे मदीना** करना कहते हैं। आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये, अगर फ़िलह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की पच्चीसवीं शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड के लिये उस की वरक़ गर्दानी कर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले के ख़ाने भरने का ज़ेहन बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल

मग़्फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

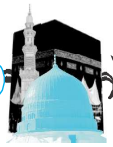

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

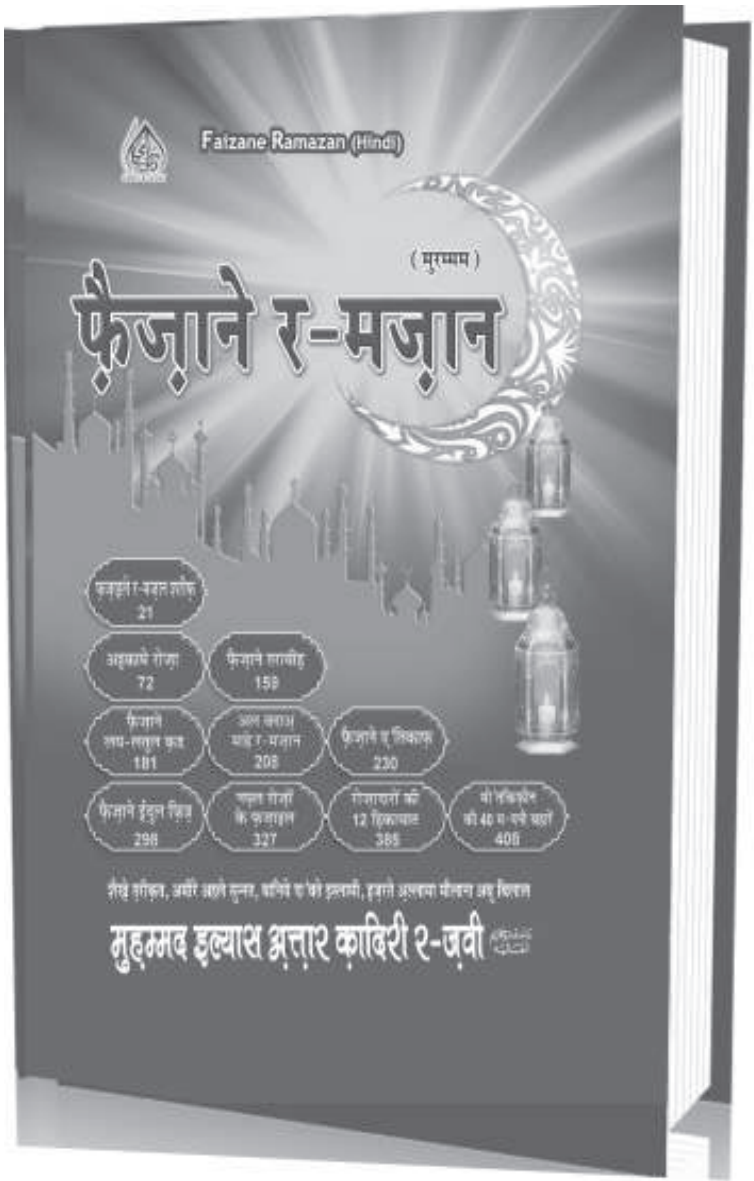

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

दीन की ता'लीम सीखने जाने वाले की फ़ज़ीलत

हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि जो अपने दीन की ता'लीम में सुब्ह को चला, या शाम को चला वोह "जन्नती" है।

(کنزالعمال، ۵/۶۱، الجزء۱۰، حدیث: ۲۸۷۰۲)

M.R.P. ₹ 00/-

01082110

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net